राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शनिवार • 29 अक्टूबर • 2022

लाल मसूर दाल में बड़े गुण, पौष्टिकता का खजाना

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

दलहन उत्पादन बढ़ाने के क्रम में सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि ने किसानों को वैज्ञानिक तरीके से लाल मसूर दाल के उत्पादन को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू किया है। लाल मसूर दाल के गुणों का बखान करते हुए वैज्ञानिकों ने कहा कि अत्यधिक पौष्टिकता के कारण बाजार में इसकी मांग बराबर बनी रहती है। यदि किसान आधुनिक वैज्ञानिक तरीके से इसकी खेती करें तो दानों की उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है।

सीएसए कृषि विवि ने मसूर उत्पादन पर दी किसानों को सलाह

लाल दाल के नाम से जाना जाने वाले मसूर दाल में पौष्टिकता का खजाना है। मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.21 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम निकासीन पाया जाता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है।

इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र, प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभ मिलता है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है।

मसूर उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है भारत

विवि के अधीन संचालित दलीपनगर कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभार वैज्ञानिक डॉ. विनोद प्रकाश के अनुसार दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग ही महत्वपूर्ण स्थान है। अन्य दालों की अपेक्षा इसमें सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है। मसूर उत्पादन में भारत को आगे बताते हुए उन्होंने कहा कि विश्व में अभी भारत का मसूर उत्पादन में दूसरा स्थान है। लेकिन अभी उत्पादन और बढ़ाने की जरूरत है। रोगियों के लिए तो यह दाल अत्यंत लाभकारी है।

नवम्बर मध्य तक बुआई कर प्राप्त करें बेहतर उत्पादन

शोध छात्र प्रभात सचान ने किसानों को सलाह दी है कि मसूर के अधिक पैदावार के लिए मध्य नवम्बर तक बुआई उपयुक्त है। समय से बुआई के लिए 30 से 35 किग्रा व देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। बेहतर उत्पादन के लिए उर्वरक में 20 किग्रा नत्रजन, 40 किग्रा फास्फोरस, 20 किग्रा पोटाश व 20 किग्रा सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर जिंक का भी प्रयोग करना चाहिए। किसानों को मसूर की उन्नत प्रजातियों डीपीएल 15 व 62, वूरी, के 75, आईपीएल 81 व एलएस 218 का उपयोग करने की सलाह दी गई है।

उत्तर प्रदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

प्रदेश में तेज गति से हो रहा गंगा... 05

'नियमों में नहीं होगा बदलाव, आईटी नियमों का... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 18
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
शनिवार | 29 अक्टूबर, 2022

5,600 कर्मचारियों की हो सकती है छंटनी

- द वॉशिंगटन पोस्ट की एक रिपोर्ट के मुताबिक, मस्क कंपनी के 7,500 एम्प्लॉइज में से 75 प्रतिशत, यानी करीब 5,600 कर्मचारियों को नौकरी से हटा सकते हैं। उन्होंने ट्विटर डील के दौरान संभावित निवेशकों से यह बात कही थी। हालांकि, यह रिपोर्ट आने के बाद ट्विटर के जनरल काउंसल सीन एजेट ने इससे इनकार किया है। कर्मचारियों को ईमेल भेज कर कहा कि कंपनी छंटनी को लेकर कोई प्लान नहीं बना रही है।

मस्क ट्विटर की आजादी के पक्षधर

किसानों को मसूर की फसल के बारे में दी जानकारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. विनोद प्रकाश ने बीते दिन शुक्रवार को किसानों को दलहनी फसलों में मसूर के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लाल दाल के नाम से जानी जाने वाली मसूर के उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन, 0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने मसूर की उन्नतशील प्रजातियों व इसकी बुवाई से संबंधित जानकारी दी।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

शुक्रवार 28 अक्टूबर 2022 | अंक - 284

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DAY

मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसानः विनोद प्रकाश

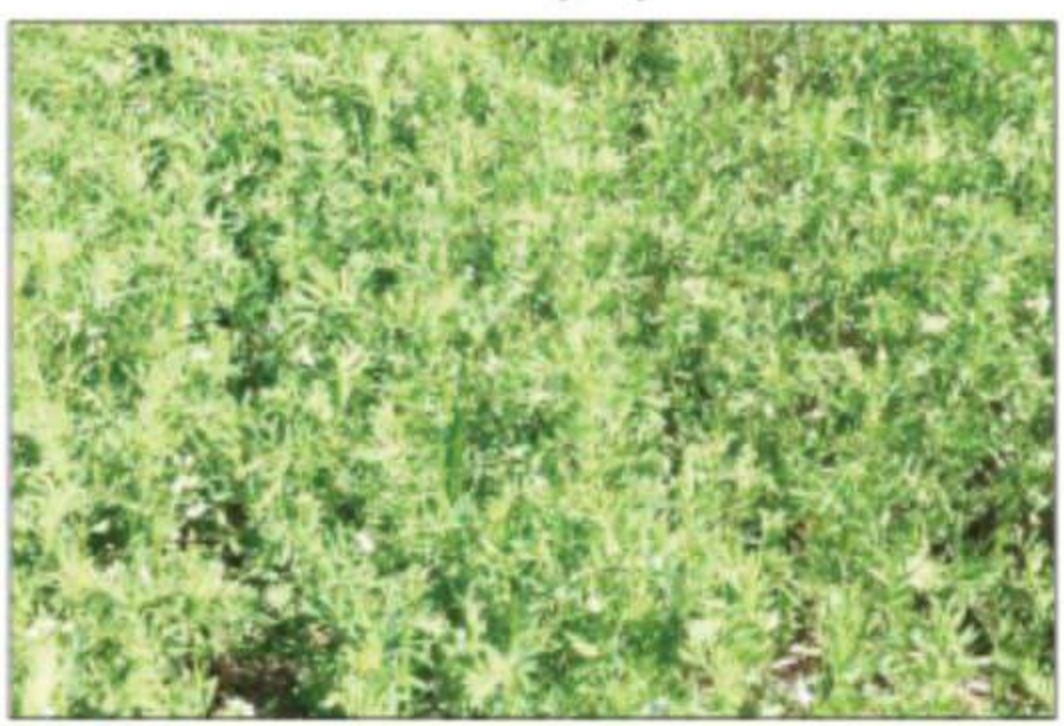

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम निकोटिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है। उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में

लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। सीथ छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे-डीपीएल 15,डीपीएल 62, पूरी, के 75,आइ पी एल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है।

मसूर की दाल सेहत के लिए फायदेमंद

मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसान

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है।उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इससे इससे अधिक पैदावार के लिए मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15,डीपीएल 62, नूरी, के 75,आइ पी एल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है

मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसान

वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश

कानपुर, 28 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है।उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शोध छात्र प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे अधिक पैदावार के लिए मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15,डीपीएल 62, नूरी, के 75,आइ पी एल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20

■ मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान

मसूर की फसल।

किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है

रहस्य संदेश

RNI.NO.UPHIN2007/2

: 291 एटा से प्रकाशित शनिवार 29 अक्टूबर 2022 पृष्ठ : 8 मूल्य : 50 पैसा मात्र

मसूर की वैज्ञानिक खेती कर अधिक लाभ कमायें किसान– डॉ विनोद प्रकाश

(अनवार अशरफ)

कानपुर (रहस्य संदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ विनोद प्रकाश ने बताया कि दलहनी फसलों में मसूर का अपना अलग एक महत्वपूर्ण स्थान है। मसूर दाल जिसे लाल दाल के नाम से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि मसूर उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। उन्होंने बताया की मसूर के 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिलीग्राम नियासिन पाया जाता है। जो मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है इसके सेवन से अन्य दालों की अपेक्षा सर्वाधिक पौष्टिकता पाई जाती है उन्होंने बताया कि रोगियों के लिए यह दाल अत्यंत लाभप्रद है। इसके

सेवन से दस्त, बहुमूत्र,प्रदर, कब्ज व अनियमित पाचन क्रिया में लाभकारी है। इसका हरा व सूखा चारा पशुओं के लिए स्वादिष्ट व पौष्टिक होता है। शीप खान प्रसून सचान ने किसानों को सलाह दी है कि इसके इससे

अधिक पैदावार के लिए मध्य नवंबर तक इसकी बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि मसूर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे- डीपीएल 15,डीपीएल 62, पूसी, के 75,आइ पी एल 81, एलएस 218 प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि समय से बुवाई के लिए 30 से 35 किलोग्राम एवं देर से बुवाई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। तथा उर्वरक 20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश एवं 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। जिंक की कमी वाले खेतों में 25 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से दें। बुवाई के पूर्व बीज का शोधन अवश्य कर दें। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि किसान भाई आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल एवं भूसे की उपज 30 से 35 कु. प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है

अमर उजाला कानपुर 29/10/2022

15 नवंबर तक कर दें मसूर की बुआई

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) दलीपनगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. विनोद प्रकाश ने मसूर की बुआई के लिए शुक्रवार को एडवाइजरी जारी की। 100 ग्राम दाने में औसतन 25 ग्राम प्रोटीन, 1.3 ग्राम वसा, 7.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 3.2 ग्राम रेशा, 68 मिलीग्राम कैल्शियम, 7 मिलीग्राम लोहा, 0.2 1 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन ,0.51 मिलीग्राम थायमीन और 4.8 मिग्रा नियासिन पाया जाता है।

शोध छात्र प्रसून सचान ने बताया कि अधिक पैदावार के लिए 15 नवंबर तक इसकी बुवाई कर दें। बोने के लिए उन्नतशील प्रजातियां डीपीएल 15, डीपीएल 62, नूरी, के75,आईपीएल 81 और एलएस 218 प्रमुख हैं। समय से बुआई के लिए 30 से 35 किलोग्राम और देर से बुआई के लिए 50 से 60 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है। बताया कि किसान आधुनिक तरीके से इस की उन्नत खेती करें तो दानों के उपज 20 से 25 कुंतल और भूसे की उपज 30 से 35 कुंतल प्रति हेक्टेयर ली जा सकती है। (संवाद)

गेहूं की बुवाई, किसानों को दी गयी जानकारियां

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। वैज्ञानिक ने बताया कि देश की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई का समय आ रहा है। किसान भाई फसल की अधिक पैदावार के लिए इस समय बीज से लेकर खेत की तैयारी, बुवाई का समय, बीजों की उन्नत किस्मों का चयन और बुवाई की विधि के अलावा खाद एवं उर्वरक को लेकर तैयारी करें। किसानों को जैविक खादों के प्रयोग करने के साथ ही कंपोस्ट खाद के प्रयोग से फसल को लाभ होता है। किसान गेहूं की बुवाई के पूर्व अपने खेत की जुताई तीन से चार बार मृदा को काफी महीन तरीके से करें।और उस पर फैले खरपतवार व फसल अपशिष्ट का प्रबंध कर के नष्ट करे। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि किसान भाई गेहूं की फसल में सूचहम पोषक तत्वों का ही प्रयोग करें।